موضوع الخطبة : الناقض العاشر: الإعراض عن دين الإسلام، لا يعلَمه ولا يعمل به

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

दसवां भंजक: (इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न उस का ज्ञाप प्राप्त करना और न उस पर अमल करना)

الإعراض عن دين الإسلام، لا يعلَمه ولا يعمل به

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

इस्लामी शरीअ़त का अनुगमन करना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उस का भय सवैद अपने हृदय मी जीवित रखो,उस का आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि अल्लाह तअ़ाला ने अपने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुगमन का आदेश पवित्र क़ुरान में ३३ स्थानों पर दिया है,[1]उदाहरण स्वरूप अल्लाह का यह कथन:

﴿وما آتاكم الرسول **فخذوه** وما نهاكم عنه فانتهوا﴾

अर्थात:और जो प्रदान कर दें रसूल,तुम उसे ले लो और रोक दें तूम को जिस से तो तुम रुक जाओ।

---

[1] **शैखुल इस्लाम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह ने तीस से अधिक स्थानों पर क़ुरान में अपने रसूल के अनुगमन का आदेश दिया है,आप के अनुगमन को अपने अनुगमन के साथ बयान किया है,आप के विरोध को अपने अवज्ञा के साथ बयान किया है,इसी प्रकार आप के नाम को अपने नाम के साथ बयान किया है,अत: जहां अल्लाह का ज़िक्र होता है वहां आप का भी ज़िक्र होता है।"مجموع الفتاوى" (१९/१०३),इसी प्रकार से आजुरी ने "الشريعة" पृष्ठ संख्या:४९ में इस बात का उल्लेख किया है।**

तथा फरमाया: ﴿قل **أطيعوا** الله وأطيعوا الرسول فإن تولوا فإن الله لا يحب الكافرين﴾

अर्थात:हे नबी!कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

अधिक फरमाया: ﴿يا أيها الذين آمنوا **أطيعوا** الله ورسوله ولا تولوا عنه وأنتم تسمعون

अर्थात:हे ईमान वालो!अल्लाह के आज्ञाकारी रहो तथा उस के रसूल के।और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿يا أيها الذين آمنوا أطيعوا الله **وأطيعوا** الرسول وأولي الأمر منكم﴾

अर्थात:हे ईमान वालो!अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो,और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो।

इसी प्रकार से अनेक ह़दीसें आई हैं जो आप की आज्ञा एवं अनुगमन करने,और आप के मार्ग पर चलने और आप के आदेश एवं निषेध का आदर करने पर प्रोत्साहित करती हैं,उदाहरण स्वरूप अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की यह ह़दीस कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मेरी उम्मत के सारे लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे किन्तु जो इंकार करेगा।सह़ाबा ने पूछा:अल्लाह के रसूल!वह कौन है जो

इंकार करेगा?आप ने फरमाया:जिस ने मेरी आज्ञा की वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और जिस ने मेरी अवज्ञा की तो उस ने नि:संदेह इंकार किया।[2]

आप रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिस ने मेरा अनुगमन किया उस ने अल्लाह का अनुसरण किया और जिस ने मेरा अवज्ञा किया उस ने अल्लाह का अवज्ञा किया।[3]

तथा आप रज़ीअल्लाहु अंहु अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं कि आप ने फरमाया:जब मैं तुम्हें किसी चीज़ के रोकूं तो रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी चीज़ के करने का आज्ञा दूं तो अपनी शक्ति अनुसार उसका पालन करो।[4]

अबूसईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:शपथ है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा प्राण है,तुम सब के सब स्वर्ग में अवश्य प्रवेश करोगे सिवाए उस के जिस ने इंकार किया और अल्लाह के अनुसरण से उसी प्रकार मुँह फेरा जिस प्रकार से ऊंट (अपने स्वामी से मुँह फेर कर) बिदक जाता है,सहाबा ने पूछा:ऐ अल्लाह के रसूल!स्वर्ग में प्रवेश होने से कौन इंकार कर सकता है?

---

[2] सही बोखारी (७२८०)

[3] सही बोखारी (७१३७) सही मुस्लिम (१८३५)

[4] सही बोखारी (७२८८) सही मुस्लिम (१३३७)

आप ने फरमाया:जिस ने मेरी अनुसरण किया वह स्वर्ग में प्रवेश होगा और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने इंकार किया।[5]

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने का परिचय एवं यह स्पष्टीकरण कि वह इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का विपरीत है इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न इसे सीखना और न उस पर अमल करना,और धर्म के उन सिद्धांत को सीखने और उस पर अ़मल करने से मोकल्लफ/बाध्य (धर्मिक रूप से उत्तरदायी) बंदा को रोकना जिन के बिना इस्लाम सही नहीं होता।अपने कान और दिल के द्वारा इस्लाम धर्म से मुँह मोड़ना,न उस की पुष्टि करना,न उसे झुठलाना,न उस से शत्रुता रखना और शत्रुता दिखाना,और न उस की शिक्षाओं पर कान धरना।[6]जैसे ईमान के स्तंभों और उस के संबंधित चीज़ों को सीखना,और उन वंदनाओं का तरीका जानना जो अल्लाह पर ईमान लाने से अनिवार्य हो जाते हैं,जैसे नमाज़,ज़कात,और अल्लाह व

---

[5] इस ह़दीस को इब्ने माजा (१/१९६-१९७) ने ह़दीस संख्या (१७) के अंतर्गत रिवायत किया है,इस के वर्णनकर्ता मुस्लिम के वर्णनकर्ता हैं,इस ह़दीस के कुछ शवाहिद भी हैं जो उसे सशक्त करते हैं जैसे अबूहोरैरा की उपरोक्त ह़दीस और अबूहोरैरा की वह ह़दीस जिसे अ़हमद (२/३६१) आदि ने रिवायत किया है,इसकी सनद शैखैन की शर्त पर है जैसा कि ह़फिज़ ने में ह़दीस संख्या (७२८०) के विवरण में उल्लेख किया है,उपरोक्त ह़दीस पर शैख शेऐ़ब की टिप्पणी संक्षेप में वर्णित है।

[6] यह इब्नुल क़य्यिम का क़थन है जो "مدارج السالكين" (१/३३८) में वर्णित है।

रसूल का प्रेम आदि,तो यह इस्लाम भंजकों में से है।अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे,इस का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿**ومن أظلم** ممن ذُكِّـر بآيات ربه ثم أعرض عنها إنا من **المجرمين** منتقمون﴾

अर्थात:और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा,फिर विमुख हो जाये उन से?वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

अर्थात उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कोई नहीं जो अल्लाह की आयतों से मुँह फेर ले,अल्लाह ने उसे अत्याचारी का नाम दिया है,अत: जो व्यक्ति अपने शरीर के अंगों से कोई अ़मल नहीं करता,केवल ज़बान से शहादतैन (لا إله إلا الله محمد رسول الله**) को स्वीकारने पर बस करता है,तो वह काफिर है,उसे विद्धान (विशेष अ़मल को छोड़ने वाले) का नाम देते हैं,कुछ लोग उसे धर्म से अप्रसन्न कहते हैं,वास्तविकता यही है कि शरीअ़त से मुँह फेरने वाले का दिल दूषित होता है,क्योंकि यदि उस के दिल में ईमान की सौजन्य होती तो उस के शरीर के अंग अ़मल करते,इस लिए कि दिल राजा है और शरीर के अंग उस के सेना हैं,जो उसका अवज्ञा नहीं करते,किन्तु जब दिल ही दूषित हो जाए तो शरीर के अंग भी बेकार हो जाते हैं,हम अल्लाह से सुख की दुआ़ करते हैं।**[7]

---

[7] **देखें: "مجموع الفتاوى" (७/२०४ और उस के पश्चात) उन्होंने इस अध्याय में पूर्व के ईमामों के वर्णनों का उल्लेख किया है।**

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने का अत्यधिक निवारण

अल्लाह के बंदो!अनेक आयतों में अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने से रोका गया है,अल्लाह का फरमान है:

﴿ومن **أعرض** عن ذكري فإن له معيشة ضنكا ونحشره يوم القيامة أعمى﴾

अर्थात:तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से,तो उसी का संसारिक जीवन संकीर्ण (तंग) होगा,तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा कर के।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿**ومن أظلم** ممن ذُكِّـر بآيات ربه ثم أعرض عنها إنا من **المجرمين** منتقمون﴾

अर्थात: और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा,फिर विमुख हो जाये उन से?वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿ومن أظلم ممن ذكر بآيات ربه **فأعرض** عنها ونسي ما قدمت يداه﴾

अर्थात:और उस से बड़ा अत्याचीरी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये?

अल्लाह ने फरमाया: (इस से बड़ा अत्याचारी कौन है) का अर्थ है:कोई व्यक्ति इससे बड़ा अत्याचारी नहीं है।

अल्लाह का फरमान है: ﴿فإن **أعرضوا** فقل أنذرتكم صاعقة مثل صاعقة عاد وثمود﴾

अर्थात:फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

अधिक फरमाया: ﴿ومن **يعرض** عن ذكر ربه يسلكه عذابا صَعَدا﴾

अर्थात:और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से,तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।

अर्थात:सख्त दुष्कर,कष्टदायक और त्रासिक यातना देगा।

तथा अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿قل أطيعوا الله والرسول فإن **تولوا** فإن الله لا يحب الكافرين﴾

अर्थात: हे नबी!कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने वाले की बुद्धि और विचार पर शैतान प्रभावी होता है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने के कारण शैतान मुनुष्य का हृदय एवं विचार पर प्रभावी हो जाता है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿ومن يعش عن ذكر الرحمٰن نقيض له شيطانا فهو له قرين * وإنهم ليصدونهم عن السبيل ويحسبون أنهم مهتدون﴾

अर्थात:और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अँधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशेषता है

- **अल्लाह के बंदो!नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त से मुँह फेरना काफिरों एवं मोनाफिक़ों का गुण है,अल्लाह तआ़ला फरमाता है:**

﴿والذين كفروا عما أنذروا **معرضون**﴾

अर्थात:तथा जो काफिर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुए हैं।

प्रथम उपदेश की समाप्ति:

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त के अनुसरण की अनिवार्यता और उससे मुँह फेरने की निवारण के विषय में एक लाभदायक प्रक्कथन है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि अल्लाह के धर्म का अनुसरण अनिवार्य है,उस का तरीका यह है कि उस का ज्ञान प्राप्त किया जाए और उस पर अ़मल किया जाए,मुसलमान को चाहिए कि इस्लाम धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करे और उन पर अ़मल करे,उन सिद्धांतों में इस्लाम के इस्लाम के पांच स्तंभ और ईमान के छे स्तंभ सूची के शीर्ष पर हैं,इस्लाम विरोधी गतिविधियों में

पड़ने से सचेत रहे,जिन में इस्लाम के दस भंजक सूची के शीर्ष पर हैं,उस के पश्चात उन छोटे एवं बड़े पापों की श्रेणी आती है जिन से ईमान में कमी होती है,उन से भी सचेत रहे,क्योंकि यह पाप यद्यपि धर्म से बाहर नहीं करते किन्तु धर्म की संपूर्णता के विरुद्ध अवश्य हैं और मनुष्य को आखेरत की यातना का पात्र बना देते हैं।

अ़मल एवं अ़मल का बदला व पुण्य

अल्लाह तआ़ला ने उस व्यकित से बड़ा बदला एवं पुण्य का वादा किया है जो शरीअ़त की ओर ध्यान मग्न होते,उसे सीखते और उस पर अ़मल करते हैं,ज्ञान की सदगूण नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस में आई है:जो व्यक्ति उस मार्ग पर चलता है जिस में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है जो अल्लाह तआ़ला उस के द्वारा उस के लिए स्वर्ग का मार्ग आसान कर देता है,अल्लाह के घरों में से किसी घर में लोगों का कोई समूह प्रवेश नहीं करता,वे क़ुरान का सस्वर पाठ करते हैं और उसका पाठ करते हैं मगर उन पर सकीनत(संतुष्टि एवं हृदय की शांति)अवतरित होता है और (अल्लाह का) कृपा उनको ढांप लेता है और देवदूत उन को अपने घेरे में ले लेते हैं और अल्लाह तआ़ला अपने समीपवर्तियों में जो उस के पास होते हैं उनका जिक्र करता है।[8]

[8] इस ह़दीस को मुस्लिम (२६९९) ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

रही बात अ़मल की सदगूण की तो अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:नि:संदेह अल्लाह तआ़ला का फरमान है:....मेरा बंदा जिन जिन इ़बादतों (वंदनाओं) के द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करता है उन में से कोई इ़बादत मुझे इतनी पसंद नहीं जितनी वह इ़बादत पसंद है जो मैं ने उप पर फर्ज़ किया है।मेरा बंदा नफिल के द्वारा भी मुझ से एतना निकट हो जाता है कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूं और जब मैं उससे प्रेम करने लगता हूं तो मैं उस का कान बन जाता हूं जिससे वह सुनता है,उस की आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है।उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है और उस का पैर बन जाता हूं जिस से वह चलता है।यदि वह मुझ से मांगे तो मैं उस देता हूं।मैं किसी चीज़ में संदेह नहीं करता जिस को मैं करने वाला होता हूं,जो तरदुद मुझे का प्राण निकालते समय होता है,वह मृत्यु के कारण कष्ट पसंद नहीं करता मुझे भी उसे कष्ट देना अच्छा नहीं लगता है।[9]

द्वतीय उपेदश की समाप्ति

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليم

[9] सह़ी बोखारी (६५०२)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी